P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मृदंगाचार्य गुरू पंण्डित गया प्रसाद का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा कुछ विशेष कृतित्व

आकांक्षा कृष्ण
अध्यापक,
संगीत विभाग,
सीक्रेट हर्ट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बरेली

सारांश

उत्तर भारत के प्रसिद्ध मृदंगाचार्य कुदऊ सिंह घराने में 30 जुलाई 1858 में पण्डित गुरू गया प्रसाद मृदंगाचार्य का जन्म दतिया (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उस समय दतिया में महाराज भवानी सिंह का राज्य था। पंण्डित गया प्रसाद के पिता का नाम पंडित राम प्रसाद मृदंगाचार्य था जो कुदऊ सिंह के कनिष्ठ भ्राता थे।

घराने के वंशज एवं पंडित गया प्रसाद के कनिष्ठ पौत्र पंडित रामजी लाल शर्मा जो आकाशवाणी लखनऊ के पूर्व पखावजी एवं ''ए'' श्रेणी के कलाकार हैं के अनुसार–पंडित गया प्रसाद की शिक्षा–दीक्षा घर पर ही हुई। परिवार में पंडित गया प्रसाद को मृदंग की मौखिक शिक्षा तीन वर्ष की अवस्था से दी जाने लगी। पिता पंडित रामप्रसाद मृदंगाचार्य स्नेह में पुत्र गया प्रसाद को सीने पर लिटा लेते और मृदंग के कायदों भी मौखिक तालीम देकर कंठस्थ कराते थे। पांच वर्ष की अवस्था पर ताऊ कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य ने शिवतेरस पर्व पर गया प्रसाद से गुड़ और चने से गणेश का पूजन कराया तथा हाथ में गंडा बांधा। गंडा बांध कर मृदंग की तालीम को शुरू कराया। उनके घराने की परम्परा के अनुसार विधिवत् रूप से मृदंग की तालीम आरम्भ कर दी गयी।

मुख्य शब्द : मृदंगाचार्य, आकाशवाणी, मृदंग, परिचय

प्रस्तावना

पंडित गया प्रसाद के पूर्व पितामह पंडित काशीप्रसाद बनारस में राज पुरोहित थे। वहीं पंडित काशी प्रसाद ने नीलम्बार और पीताम्बर से शौकिया मृदंग की शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद विरासत में पिता अपने पुत्र को मृदंग की तालीम देता गया। पंडित काशी प्रसाद की कई अगली पीढ़ियों के बाद पंडित भवानी प्रसाद ने विशेष रूप से मृदंग की शिक्षा लेकर, पंडित भवानी प्रसाद मृदंगाचार्य कहलाये और तत्पश्चात पंडित भवानी प्रसाद मृदंगाचार्य के पुत्र पंडित ईश्वरी प्रसाद मृदंगाचार्य (गुप्ते जी) जो पंडित गया प्रसाद के पितामह थे, उत्तर प्रदेश के श्रेष्ठ मृदंगवादक के रूप में विख्यात हुए। पंडित ईश्वर प्रसाद के दो पुत्र ज्येष्ठ पंडित कुदऊ सिंह जिनके नाम से ये घराना विख्यात हुआ और कनिष्ठ पंडित रामप्रसाद मृदंगाचार्य जो पंडित गया प्रसाद के पिता और पंडित कुदऊ सिंह के समकक्ष मृदंग वादक थे।

पंडित गया प्रसाद के प्रपौत्र पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य के अनुसार परिवार में पंडित गया प्रसाद के जन्म के विषय में एक किवदंती है कि पंडित ईश्वरी प्रसाद (मृदंगाचार्य) के ज्येष्ठ पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य के मात्र एक पुत्री थी तथा पंडित रामप्रसाद के कोई संतान काफी समय तक नहीं हुई। वंश की वेल आगे बढ़ाने के लिए धर्मगुरूओं और संतो आदि से बुजुर्गों द्वारा परामर्श लेने के तत्पश्चात परिवार के पितरों का आव्हान किया गया। पंडित गया प्रसाद की पूर्व पितामाह पंडित भवानी प्रसाद मृदंगाचार्य ने स्वप्न में आकर पंडित रामप्रसाद को आश्वस्त किया कि मै तेरे पुत्र के रूप में जन्म लूंगा। वाल्यावस्था में पंडित पंडित गया प्रसाद को मृदंग थपिया बहुत भाती थी। जब भी बालक रोता था, तो थपिया की आवाज सुनकर चुप हो जाता था। यहां बताना अनिवार्य है कि जिस प्रकार तबले में ताल होती है उसी प्रकार पखावज में थपिया कहलाती है पंडित गया प्रसाद ने अपनी तालिम बहुत खुशी से ग्रहण की थी। घर में पिता मृदंगाचार्य थे तथा ताऊ कुदऊ सिंह श्रेष्ठ मृदंगाचार्य भी थे। अतः पांच वर्ष की अवस्था से आपको मृदंग का रियाज कराना आरम्भ हो गया था। परिवारके सभी 72 कायदे और सैकड़ों परने पंडित गया प्रसाद जी को कंठस्थ हो गयी थी। इसके अतिरिक्त हिन्दू, उर्दू, फारसी के साथ–साथ थोड़ा–थोड़ा पंजावी भाषा का ज्ञान था। धर्म में आपको विशेष रूचि थी। आप भगवान शंकर के भक्त थे। धर्मग्रन्थों पर आपका अटूट विश्वास था। वे धार्मिक ग्रन्थों पर तर्क

वितर्क करना पसंद नहीं करते थे। वे प्रातः नहा धोकर माता बगुलामुखी के समक्षा बैठकर मृदंग वादन से माता की स्तुति करते थे।

पंडित गया प्रसाद की शादी श्रीमती जमुना देवी से हुई थी जो स्वयं श्रेष्ठ मृदंगवादक थी तथा उनके भाई पंडित जानकी प्रसाद मृदंगाचार्य, दतिया के दरवारी पखावजी थे। शादी के कुछ समय पंडित गया प्रसाद ने दतिया छोड़कर ग्वालियर के दरवार में महाराज सिन्धिया जीवाजी राव के दरवार में दरवारी पखावजी पर राजाश्रय प्राप्त कर लिया। क्योंकि कि दतिया में उनकी प्रतिस्पर्धा उनके सगे साले पंडित जानकी प्रसाद मृदंगाचार्य से होना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। वाद में राजनैतिक उथल पुथल के कारण उनके ताऊ कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य को अंग्रेजों ने बंदी बना लिया था। वे मृदंग वादक के साथ, झांसी की रानी के अंगरक्षक भी थे। उधर उनके पिता पंडित राम प्रसाद की मृत्यु हो चुकी थी। उनके पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य दतिया से रामपुर रियासत आते जाते थे। अतः पंडित गया प्रसाद के पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य ने रामपुर (उ0प्र0) में अपना स्थान बना लिया था। अतः पंडित गया प्रसाद अपने पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद के साथ रामपुर रियासत में आश्रय ले लिया।

पंडित गया प्रसाद के पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य के शिष्य विद्याशंकर अनिलेश (बरेली निवासी), जो पंडित गया प्रसाद के जीवन काल में ही पंडित अयोध्या प्रसाद से मृदंग की तालीम ले रहे थे के कनिष्ठ पुत्र गौरव शंकर मृदंगाचार्य (पंडित घराने से सम्बद्ध) के अनुसार पंडित गया प्रसाद जी एक ही समय में मृदंग कर ठेका देते हुए मुंह से विभिन्न व परन व टुकड़े सहजता से बोल देते थे। पंडित गया प्रसाद ''धुमकिट'' का बहुत ही मीठा प्रयोग बहुत सहजता से करते थे। शोधार्थी द्वारा पूंछी प्रश्नोंत्तरवली में किसी प्रसंग पर बताया पंडित गया प्रसाद को रियासत के मृदंगवादक के अतिरिक्त भी समाज में काफी सम्मान था। लोग उनका मृदंग वादन सुनने काफी दूर से आया करते थे प्रसंग में आगे सुनाया कि रियासत में एक धुपद गायक कलाकार श्री रामेश्वर पाठक बनारस से आया उसका कहना था कि कोई मृदंग वादक उसके साथ संगत नहीं कर सकता। पंडित गया प्रसाद ने सुना उन्होंने उसकी चुनौती को स्वीकार कर लिया। सभी रियासत के श्रेष्ठ कलाकार एकत्र हुए। कार्यक्रम चौक हैदर अली खां (जो अब मिस्टन गंज है) सनातन धर्म सभा के अर्न्तगत आयोजन हुआ। पंडित गया प्रसाद अपने पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद के साथ मृदंग लेकर स्टेज पर उपस्थित हो गये। पंडित जी ने मृदंग खोला और उसकी वायीं पुड़ी पर आटा लगाया। रियासत के चार तान पुरा वादक उस्ताद बुंदा खां साहब ने सारंगी संभाली हुई थी। पंडित जी ने पखावज की थाप लयछड़ परन को मृदंग से निकाल कर कार्यक्रम का श्री गणेश किया।

ध्रुपद गायक रामेश्वर पाठक ने ऋषभ, आसावरी राग में ध्रुपद का आला पचारी नौम तौम से आरम्भ किया। गायक ने आला पचारी बन्द करके ध्रुपद शुरू कर दिया। पंडित जी भी विलम्बित लय से मृदंग वादन में सम की आवृत्ति पर ''धा'' लगाते हुए संगत दे रहे थे। उसने स्थायी संचारी, आभोग, गाने के उपरान्त अन्तरा प्रारम्भ किया। गायक का अपना ध्रुपद सुरताल में था जिसकी दस मात्राएं होती हैं, लेकिन वो चार आवर्तनों में विलम्बित लयकारी में दस मात्रा को चालीस मात्राओं में एक आवर्ती में गा रहा था। वह लयकारी आड़, कुआड़, बिआड़ एवं महाविआड़ एवं घात अनाघात का प्रयोग कर रहा था। पंडित गया प्रसाद भी चिपक बजाते हुए उसका जबाव देते चले जा रहे थे और पंडित जी ने गायक रामेश्वर पाठक का एक भी मुंह निकलने नहीं दिया। तभी पंडित गया प्रसाद ने अपने घराने की एक विशेष तालीम गोरख धन्धा अठगुन की लयकारी में वजाना प्रारम्भ कर दिया। अभी पंडित जी ने पांच मिनट ही बजाया होगा कि ध्रुपद गायक रामेश्वर पाठक को अपना गायन समाप्त करना पड़ा क्योंकि वह अपनी ताल नहीं देख पा रहा था और उठकर उसने पंडित गया प्रसाद के पैर पकड़ लिए और चुनौती के लिए क्षमा मांगने लगा।

पंडित गया प्रसाद की इस अद्भुत प्रतिभा को जानकर रियासत के नवाब हामिद अली खां साहब ने पंडित गया प्रसाद को ''आफताव ए मृदंग'' से विभूषित किया। पंडित गया प्रसाद के पौत्र पंडित रामजी लाल शर्मा मृदंगाचार्य के अनुसार–20 अक्टूबर 1940 को करवा चौथ के दिन रामपुर (उ0प्र0) पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य का देहान्त हो गया।

विशेष कृतित्व

घराने के वंशज एवं पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य के ज्येष्ठ पौत्र पंडित शीतला प्रसाद मृदंगाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र पंडित सूर्य कान्त शुक्ल मृदंगाचार्य (पूर्व मृदंगवादक आकाशवाणी रामपुर) ने शोधार्थी द्वारा पूंछी प्रश्नोत्तरावली के सातवीं क्रम प्रश्न में पंडित गया प्रसाद की विशेष, चारताल में धुमकिट की निम्न परन बतायी हैः–

धुमकिट तकिट तकाकिट तकतक धुमकिट धुमकिट
0 2
तकिट तकातिट तकतक धुमकिट तकधुम किटतम
3 4
तकतक धुमकिट तकिट तकाड़ तिटकत गदिगिन
0
धा तिटकत गार्दगिन धा तिटकत गादिगिन ।धा।।

धमारताल वृत नहीं, त्रिभुज (पंडित गया प्रसाद)

सभी ध्रपद गायक यद्यपि धमार ताल में चौदह मात्रायें मानते हैं। तद्यपि मृंदगांचार्य कुदऊ सिंह के घराने की परम्परा के अनुसार पंडित गया प्रसाद जी इसकी मात्राओं का विभाजन 3+2+3+2+2+2 में मानते हैं और इसकी थपिया ''ठेका'' के बोलों का विभाजन ''क घिटधिट, धा धा S, तिन,तिन ता, S'' होता है। 1,2,3/4,5/6,7,8/9,10/11,12/13,14 में पहली छटी, ग्याहरवीं पर ''थाप'' (ताली) और चौथी, नवीं, तेरहवीं मात्रा पर शून्य (खाली) रहते हैं।

पंडित गया प्रसाद जी के घराने का तर्क है कि धमार ताल वृत नहीं बनाता अपितु एक त्रिभुज बनाता है, जिसकी एक भुजा का परिणाम चार मात्रा है और अन्य दो भुजायें 5–5 मात्राओं की है। इसका आकार सिंघाड़े जैसा होता है। इस ताल के मात्रा–विभाजन में बोलों के बारे में

ताल के रूपमें इसकी गायकी में एक वचपना, एक लुका–छिपी, क्रीडा के रूप में एक निकल–बैठ, दांव–पेच या आंख मिचौली है।

अध्ययन का उद्देश्य

मृदंग सम्राट पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य उत्तर भारत के विख्यात मृदंग घराने '' पंडित कुदऊ सिंह घराना'' के घराने से हैं, उनको पंडित कुदऊ सिंह के सगे भतीजे होने का गौरव प्राप्त है। पंडित कुदऊ सिंह, गायक सम्राट तानसेन, सदारंग–अदारंग बैजबावरा आदि के समकक्ष प्रसिद्ध कलाकार थे, उन्हें उत्तरी भारत की रियासतों और रजवाड़ों में ख्याति व श्रेष्ठ सम्मानजनक राजाश्रय प्राप्त था। ग्वालियर रियासत में एक पागल हार्थी को मृदंग सुनाकर वश में करने के कारण, ग्वालियर नरेश ने इनको ''मस्त मतंग'' की उपाधि से सम्मानित किया था।

आज मृदंगावादन के विलुप्तिकरण के साथ, यह घराना भी विलुप्त हो रहा है। अतःउद्देश्य मात्र एवं प्रयास है कि जो संगीत में रूचि रखते हैं, वे उत्तर भारत के श्रेष्ठ मृदंग घराने के विषय में घराने के वंशल पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य के विषय उनकी वादन सामग्री के संक्षिप्त ज्ञान से लाभान्वित होवे और ज्ञानार्जन करें।

2. **मदन दहन, चारताल (चार आवृत्ति) :**

धकधक	धकधक	करतछ	दयसं	धत्तती	रतंक
×		०		२	
तकतक	तकझटि	तिमुकत	मनयथ	कृतविद्या	नकृत
०		३		४	
क्रोधक्र	द्धअति	रौद्रबु	द्धधृत	मुडमा	डलल्लो
×		०		२	
चनप्रंच	डरवो	ल्यो S S	धगाद्रध	गडधग	दिगादिग
०		३		४	×
दिगादिग	कृतनिना	दनिर	धूमधू	शिख	दिगदिग
	०		२		०
न्तनिर	ध्वान्सडो	डलदिग	गजअनं	गकृत	मदनप्र
	३		४		×
रातसुर	जनड	प्रभु	दितमन	छतबा	धाप्रभु
	०		२		०
दितमन	छतबा	धाप्रभु		दितमन	छतबा धा
	३			४	×

द्रोपदी रक्षणा — विलम्बित लय, चारताल, सतरंगी :

3.	तकतिगगन	द्रुपदसुता		धिकधिकधिक किधक		तकतवृद्धजन
	×			०		
	दीनादी	नाधिपको	गुन	गन	गा तम	गनमन
	२		०		३	
	विगत बाधाविग		तबाधाविगतबा		धा	
	४				×	

चारताल :

4.	तकतकतकतक	धूमकिटधा	दिगदिग दिगादिग		तगन्नकेनक
	×		०		
	तिधा ति	धनित	गो गों	गगन	धातम
	२		०		३
	गनमन	गिड़किड़ धागिड़	गिड़धा गिड़गिड़		धा
		४			×

चारताल :

5.	धागेतेट	तागेतेट	धगानधा	गदिगन	दिनतागे	तेटकत
	×		०		२	
	गदिगन धा	कतगदि	गनधागे	तेटकत	गदिगन	कताधातिर
	०		३		४	
	किटतकता	कतधेधे	दीन	कतधेधे	तेटधिं	तड़न्न धा
	×		०		२	०
	धेधेदित	कतकधि	किटधड़ा	नधागे	किटतकदिगन	धा
		३		४		×

चारताल :

6. धाकिट धा किटधेधे दिननग कृतधिकि दतगति दतगिन
× 0 2
धगनध गदिगन कत्रिकधि किटधित्त नधेधे तिटकतगदिगन
0 3 4
धाऽ तिटकत कत्रिकधि किटधित्त नधेधे तिटकतगदिगन
× 0 2
धाऽ तिटकत कत्रिकाधि किटधित नधेधे तिटकतगदिगन धा
0 3 4 ×

चारताल

7. धाकिट तकिटत काकिट तकिटत काऽकिट तकिटत
× 0 2
काऽकिट तकधुम किटतक तकधा तिटकता गदिगन धा
0 3 4 ×

चारताल

8. धागेतिट तागेतिट धगनधा गदिगन दिनतागे तेटकत
× 0 2
गदिगनधा कतगदि गनधागे तेटकत गदिगन कताधातिर
0 3 4
किटतकता कतधेधे दीन कतधेधे तेदीधिं तड़ुन
× 0 2
धा धेधेदित कतकधि किटधड़ा नधागे किटतकदिगन धा
0 3 4 ×

परन –चारताल

किडान तकिट तकाकिट धिड़ान तकिट तका किट किड़ान तकिटि
×
तका किट धिड़ान तकिट तकाकिट किड़ान तक धिड़ान तक किड़ान
0
तक धिडान तक धाधा किटतक धाकिट ताकिट तकाकिट तक त
2
धुमकिट तकिट तकाकिट तक तक ता तककिट धा तग तिष्ट
0
धित रान धाता धा धाता तिट धिंत तरान
3
धाता धातग तिट धिंतरान धा ता धा धा
4 ×

परन (चार ताल) :

तक तक धिकिट गिड़गिन्न नगदित धेधेधिकिट कताागदिगन
× 0
धागेतिट गदिगन तागेतिट धान धा किटतगेन्न
2 0
नगन धान धा दिककिड़ान धेधेदित धिगन नगन
3
धा धेदित धिड़ान नगन धा धेदित धिड़ान नगन धा
4 ×

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परन (चारताल) :

धुमकिटतकिट तकाकिट तका धुमकिट तकिट तकाकिट , तकाकिट
×
0
2
धुमकिट तकधुम किटकतकतक धुमकिट तकिट तका ऽऽ
0
3
धिड़ान तकिट तकाकिट तकधुमकिट ताकिट तका तिटकत गदिगन धा
4
×

धमार ताल की सादा परने

परन मृदंगायति :

धागेतिट गदिगन तागेतिट गदिगन कतातिटगोदगिन
×
नागेतिट गदिगन कतिटत गिनधा तिटकत गदिगन
2
0
धा तिटकत गदिगन धा तिटकत गदिगन धा
3
×

धमार में चक्करदार परने :

1.

धात्रक धित धिटधिट धागेतिट कधातिर धागेतिट गदिगन नागेतिट
×
तिटकत धा तिट कत धा तिटकत धा तिटकत धातिट
2
0
3
कतधा तिटकत धा तिटकत धातिट कतधा तिटकत धा
×
धात्रक धित धिटधिट धागेतिट क्रधातिर धागेतिट गदिगन नागेतिट
2
0
तिटकत धा तिट कतधा तिटकत धा तिटकत धातिट
3
×
कतधा तिटकत धा तिटकत धातिट कतधा तिटकत धा
2
0
धात्रक धित धिटधिट धागेतिट क्रधातिर धागेतिट गदिगन नागेतिट
3
तिटकत धातिट कतधा तिटकत धा तिटकत धातिट
×
2
कतधा तिटकत धा तिटकत धातिट कतधा तिटकत क
0
3
×

2. धिटधिट धागेतिट धिटधिट धागेतिट तिटकत गदिगन
×
धाता Sधा धा तिटकत गदिगन धाता Sधा धा
0 3
तिटकत गदिगन धाता Sधा धा धिटधिट धागेतिट
×
धिटधिट धागेतिट तिटकत गदिगन धाता Sधा धा तिटकत
0 3 ×
गदिगन धाता Sधा धा तिटकत गदिगन धाता
2 0
Sधा धा धिटधिट धागेतिट धिटधिट धागेतिट
3
तिटकत गदिगन धाता Sधा धा तिटकत
×
गदिगन धाता Sधा धा तिटकत गदिगन
0 3
धाता Sधा क
×

किड़नधि ताधागे दींगदि गनधा तिटकत गदिगन
×
धाधा धाधा धाS तिटकत गदिगन धा धा धा धा धाS
0 3
तिटकत गदिगन धाधा धाधा धाS किड़नधि ताधाग
× 2
दींगदि गनधा तिटकत गदिगन धाधा धाधा धाS
0 3
तिटकत गदिगन धाधा धाधा धाS तिटकत
×
गदिगन धाधा धाधा धा S किड़नधि ताधागे
2 0 3
दींगदि गनधा तिटकत गदिगन धाधा धाधा
×
धाS तिटकत गदिगन धाधा धाधा धाS
2 0
तिटकत गदिगन धाधा धा धा क
3 ×

धुमकिट तकिट तकाकिटतकतक धुमकिटतककिट
×
तकाकिट तकाथुँ तकधितधाकिट तकिटतकाकिट
2
धिड़ानतकिट तकाकिटतकधुम किटतकिटतका
0
धाता Sधा धा धाता Sधा धा धाता
3 ×
Sधा धा धुमकिट तकिट तकाकिटतकतक
2
धुमकिटतककिट तकाकिट तकाथुँ तकधितधाकिट
0 3
तकिटतकाकिट धिड़ानतकिट तकाकिटतकधुम
किटतकिटतका धाता Sधा धा धाता Sधा
× 2
धा धाता Sधा धा धुमकिट तकिट तकाकिटतकतक
0 3
धुमकिटतककिट तकाकिट तकाथुँ तकधितधाकिट
×
तकिटतकाकिट धिड़ानतकिट तकाकिटतकधुम
किटतकिटतका धाता Sधा धा धाता Sधा
2 0 3
धा धाता Sधा क
×

7. धाऽ नधि किट धागे तिट क्रधा किट
×
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
0 3
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
×
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
धाऽ नधि किट धागे तिट क्रधा किट
2 0 3
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
×
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
2
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
0
धाऽ नधि किट धागे तिट क्रधा किट
3 ×
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
2
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन धा
0 3
धाऽनधिकिट धागे तिटक्रधाकिट धागेतिटकत गदिगन क
×

शोद्यार्थी के मतानुसार उक्त रचनाओं का विशलेशण करने से स्पष्ट होता है कि पूर्व में इस प्रकार कि तिहाईयां भी प्रचलित थी। जिनको वर्तमान तिहाई की परिभाषा के प्रकाश में शास्त्रोगत नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि तिहाई की परिभाषा– एक समान बोलों को तीन बारएक ही प्रकार से बजाने को कहते हैं। जिसमें तिहाई के पहले चक्कर कर पहला धा, तथा दूसरे चक्कर का दूसरा धा, तथा तीसरे चक्कर का तीसरा तथा अन्तिम धा सम पर आता है। तभी तिहाई सही मानी जाती है।'' परन्तु शोधार्थी के निजी मतानुसार उपरोक्त वाद्यय सामग्री में रचित रचनाओं में, पूर्व से इस प्रकार की तिहाईयों को संगीत के प्रथम सिद्धान्त सौदर्य की उत्पत्ति एवं वाद्यय श्रवण से आत्मा तक तृप्त करने के लिए इसको वादन में सम्मिलित कर लिया गया होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची चित्र सहित

1. *घराने के बंशज एवं पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य के पौत्र पंडित रामजी लाल शर्मा मृदंगा एवं आकाशवाणी लखनऊ के ''ए'' श्रेणी के कलाकर निवासी राज द्वारा रामपुर प्रश्नोत्तरावली द्वारा। चित्र पंडित रामजी लाल शर्मा एवं शोधार्थी।*

2. *घराने के बंशज एवं पंडित सूर्य कान्त शुक्ला मृदंगाचार्य (प्रपौत्र पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य) निवासी राजद्वारा, रामपुर उ0प्र0 से प्रश्नोत्तरावली द्वारा। चित्र पंडित सूर्य कान्त शुक्ला एवं शोधार्थी।*

3. *श्री गौरव शंकर आर्य (मृदंगाचार्य) पुत्र श्री विद्याशंकर अखिलेश मृदंगाचार्य, जो पंडित गया प्रसाद के पुत्र पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य एवं राजसी कलाकार रियासत रामपुर, निवासी बदायूँ। उ0प्र0 चित्र गौरब शंकर आर्य एवं शोधार्थी।*

4. *श्री विपिन कुमार अध्यक्ष '' प्रोफेसर लाल जी संगीत एकेडमी, इलाहाबाद तथा जिनको प्रदेश के श्रेष्ट तवला कलाकार प्रो0 रामजी लाल श्रीवास्तव के पुत्र होने का गौरव प्राप्त है, निवासी जीरो रोड, इलाहाबाद उ0प्र0 से प्रश्नोत्तरी द्वारा। चित्र श्री विपिन कुमार एवं शोधार्थी।*